डॉ. क्रेग कीनर, मैथ्यू व्याख्यान 8, मैथ्यू 5-6 पर्वत पर उपदेश

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. क्रेग कीनर मैथ्यू की पुस्तक पर पढ़ा रहे हैं। यह माउंट पर उपदेश, मैथ्यू 5-6 पर सत्र 8 है।

हम पहाड़ी उपदेश में यीशु के तथाकथित विरोधाभासों के बारे में बात कर रहे हैं जहां वह कहते हैं, तुम हत्या नहीं करोगे, ठीक है, तुम हत्या नहीं करना चाहोगे।

तू व्यभिचार न करना, और अपने पड़ोसी की स्त्री का लालच न करना। और इनमें से कुछ चीजों से मैं वर्षों तक जूझता रहा, अपने पड़ोसी के जीवनसाथी की चाहत के लिए नहीं, बल्कि विशेष रूप से तब जब मैं अकेला था और मुझे लगता था कि किसी की सुंदरता पर ध्यान देना भी वासना करना है। यानी ये बहुत मुश्किल था।

और यीशु की माँगों ने निश्चित रूप से मेरा ध्यान खींचा। मुझे याद है एक बार मैं एक चर्च सेवा में था और मैं मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था। मैंने इतने लंबे समय से किसी की लालसा नहीं की थी और अचानक मैंने देखा कि मैं हाथों को घूर रहा था, मेरे सामने महिला के खूबसूरत हाथ प्रशंसा में ऊपर उठे हुए थे।

मैंने कहा, हे भगवान, मुझे सचमुच समस्याएं हैं। लेकिन फिर भी, प्रभु हमें हमारी समस्याओं से मुक्ति दिला सकते हैं और हमें उनके सामने शुद्ध, पवित्र, पवित्र बनने में मदद कर सकते हैं। लेकिन हमें किसी और की कामुकता का लालच नहीं करना चाहिए।

यह हमारे जीवनसाथी या हमारे भावी जीवनसाथी के प्रति विश्वासघात है। और इसी प्रकार, यीशु कहते हैं, तलाक के द्वारा अपने जीवनसाथी को धोखा न दें। क्योंकि यहां हम अपने जीवनसाथी को धोखा देकर भी बेवफाई कर रहे हैं।

ये चीजें हमारी भलाई के लिए थीं। यह ईश्वर नहीं है जो इन नियमों को हमारे लिए कठोर बना रहा है। लेकिन ईश्वर विश्वासघात का दर्द जानता है।

वह जानता है कि हम इसके लिए नहीं बने हैं। और इसलिए उसने इसे स्थापित किया ताकि हम एक-दूसरे को धोखा न दें, ताकि हम वफादार रहें। यीशु ने चेतावनी दी कि जो कोई भी पुनर्विवाह करता है वह व्यभिचार करता है।

हमने इस बारे में पहले बात की थी। यदि यह शाब्दिक है, तो सभी पुनर्विवाह व्यभिचारी हैं और इसलिए हमें दूसरी, तीसरी शादी वगैरह तोड़ देनी चाहिए। खैर, इससे पहले कि हम इस निष्कर्ष पर पहुंचें कि इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है, हमें तलाक पर यीशु की शिक्षाओं को पूरी तरह से संदर्भ में देखने की जरूरत है।

मरकुस 10 और आयत 11 के अनुसार, जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी स्त्री से विवाह करता है, वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है। उसके खिलाफ नोटिस. यह सिर्फ एक नियम नहीं है, सिर्फ एक नियम बनाना है।

यह सुनिश्चित करना है कि किसी के साथ विश्वासघात न हो। तलाक कोई पीड़ित रहित अपराध नहीं है. इससे किसी को दुख होता है.

यह ग़लत है क्योंकि यह एक निर्दोष पार्टी के साथ ग़लती करता है। कभी-कभी दोनों पक्ष दोषी होते हैं, लेकिन किसी भी मामले में, अक्सर यह एक निर्दोष पक्ष होता है। उस संस्कृति में, एक पत्नी को लगभग किसी भी कारण से तलाक दिया जा सकता था और तलाक लेने के बाद उसके पास बहुत कम आर्थिक सहारा होता था।

अब इसका मतलब यह नहीं है कि लोगों ने सोचा कि तलाक एक अच्छी बात है। उन्होंने पहचान लिया कि ऐसा नहीं था। कुछ बाद के रब्बियों ने कहा कि जब तलाक होता है तो भगवान की वेदी भी आँसू रोती है।

लेकिन दूसरी ओर, अधिकांश शिक्षकों का मानना था कि यह अनुमेय था। तो, उदाहरण के लिए, आपके पास एक महिला की कहानी है जो आई और रब्बियों से विनती की, कृपया मेरे पति को मुझे तलाक न देने दें। मैं उससे प्यार करता हूँ।

मुझे उसे जरूरत हैं। कृपया उसे मुझे तलाक न देने दें। और उन्होंने कहा, आप जानते हैं, हमें खेद है, लेकिन कानून के तहत यह उसका अधिकार है।

हम उसे रोक नहीं सकते. और वह बहुत दुखद बात थी. अब, आपके पास एक और रब्बी कहानी भी है।

मुझे नहीं पता कि यह सच है या नहीं, लेकिन इसके बारे में यह एक अच्छी कहानी है। जहां, रब्बी की शिक्षा के अनुसार, यदि एक पत्नी को 10 साल के बाद बच्चे नहीं हो सकते, तो आपको फलदायी और बहुगुणित होना चाहिए, पति और पत्नी को तलाक लेना होगा और उन्हें अन्य जीवनसाथी ढूंढना होगा और देखना होगा कि क्या वे इस तरह से बच्चे पैदा कर सकते थे। और इसलिए यह था, और यह सिर्फ रब्बी नहीं था, आप इसे स्पूडो-फिलो और अन्य जगहों पर पाते हैं, लेकिन यह एक जोड़ा है, उन्होंने कहा, ठीक है, आप जानते हैं, पति कहता है, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, लेकिन मैं कर सकता हूँ।' इसकी मदद करो.

हमें शिक्षा का पालन करना होगा। हमें फलदायी और बहुगुणित होना है। 10 साल से हमारे कोई बच्चा नहीं हुआ, इसलिए मुझे तुम्हें तलाक देना होगा।

परन्तु इस घर में जो कुछ भी तुम्हें सबसे अधिक प्रिय है, जब तुम अपने पिता के घर वापस जाओगे तो मैं तुम्हें उसे अपने साथ ले जाने दूँगा। और इसलिए, उसने कहा, ठीक है, ठीक है, मैं तुम्हें एस्तेर की तरह एक भोज देती हूँ। इसलिए, वह उसे भोज देती है।

उसने उसे अच्छे से पाला-पोसा और शराब पिलाई। और जब वह नशे में धुत्त था, तो उसके भाई आए, और उसे उठाकर उसके पिता के घर में ले गए। क्योंकि आखिरकार, उन्होंने कहा था, इस घर में जो कुछ भी तुम्हें सबसे अधिक पसंद है, वह तुम्हें मिल सकता है।

और जब वह जागा, तो उसने कहा, ओह, मैं तुम्हें तलाक नहीं दे सकता। वह रब्बियों के पास गया और उन्होंने प्रार्थना की और उन्हें एक बच्चा हुआ। तो यह कहानी है।

लेकिन किसी भी मामले में, तलाक को एक दुखद बात के रूप में मान्यता दी गई थी। लेकिन उनके पास कोई वास्तविक नियम नहीं था कि आप यह नहीं कर सकते। तो, यदि कोई व्यभिचार करता है, तो इसका शाब्दिक अर्थ क्या है? इसमें कहा गया है कि अगर वह उसे तलाक देता है तो वह उसके खिलाफ व्यभिचार कर रहा है।

इसका मतलब केवल यह हो सकता है कि वे परमेश्वर की दृष्टि में विवाहित रहें। इसलिए, यदि वह किसी और से शादी कर रहा है, तो वह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि उसने भगवान की दृष्टि में उससे शादी की है। मरकुस 10, आयत 11, जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी स्त्री से विवाह करता है, वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है।

यदि डेड्रिक की शादी शेमिका से हुई है और वह शोंडा के साथ सोता है, तो उसे ऐसी महिलाएं पसंद हैं जिनका नाम एसएच से शुरू होता है, यह शाब्दिक व्यभिचार है। लेकिन अगर डेड्रिक शेमिका को तलाक देता है और शोंडा से शादी करता है, तो यीशु कहते हैं कि यह भी व्यभिचार है। क्योंकि ईश्वर की दृष्टि में डेड्रिक अभी भी शोंडा से विवाहित है।

और इससे भी अधिक परेशान करने वाली बात, जैसा कि आपने ल्यूक 16,18 में बताया है, कि निर्दोष पक्ष भी विवाह से बंधा रहता है। इसलिए यदि कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है, दूसरी स्त्री से विवाह करता है, व्यभिचार करता है, और जो पुरुष तलाकशुदा स्त्री से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है, यद्यपि यह नहीं बताता कि उसे तलाक क्यों दिया गया। खैर, क्या यह शाब्दिक है या अतिशयोक्तिपूर्ण है? खैर, यहां कुछ बातें हैं जिन्हें हमें यह प्रश्न पूछते समय ध्यान में रखना होगा।

और मैं इस प्रश्न पर कुछ समय बिताने जा रहा हूँ क्योंकि यह वास्तव में आज कई चर्चों में विवाद का मुद्दा है। तो, मुझे लगता है कि आप पहले से ही जानते हैं कि इस पर अलग-अलग विचार हैं। मैं आपको वह देने का प्रयास करने जा रहा हूँ जो मुझे लगता है कि सबसे सटीक है।

लेकिन फिर भी, आप पहले से ही जानते हैं कि विचारों की एक श्रृंखला है। आप मुझसे सहमत होने के लिए बाध्य नहीं हैं। लेकिन यीशु अक्सर अतिशयोक्ति का प्रयोग करते थे।

मैथ्यू 5.32 में तलाक की बात का संदर्भ अतिशयोक्तिपूर्ण है। यीशु की अन्य शिक्षाएँ विवाह की अस्थिरता को मानती हैं। जब मैं विघटनशीलता कहता हूँ, तो यह नहीं कि आपको इसकी अनुमति है, बल्कि यह कि विवाह वास्तव में समाप्त हो गया है, और इसलिए आप अभी भी बाद वाले व्यक्ति से विवाह नहीं कर रहे हैं।

आप इसे कुएं पर मौजूद महिला के मामले में देख सकते हैं। आप इसे मैथ्यू 5:32 और 19:9 में अपवाद खंड के साथ देख सकते हैं। आप इसे 1 कुरिन्थियों 7:15 में अपवाद को पहचानने की पॉल की स्वतंत्रता के साथ देख सकते हैं। आप इसे मार्क 10 और श्लोक 9 के संदर्भ में देख सकते हैं। मैं इन्हें और अधिक विस्तार से करने जा रहा हूँ। यीशु अक्सर अतिशयोक्ति का प्रयोग करते थे।

अच्छा, क्या ऊँट सचमुच सुई की आँख में से निकल सकता है? मेरा मानना है कि यदि आप इसे ऊँट के रस में निचोड़ दें, तो हमें ऊँट के भोजन की चाय मिल जाएगी, है ना? आप इसे ऊँट के रस में निचोड़ सकते हैं, लेकिन तकनीकी रूप से, नहीं, ऊँट सुई की आँख में फिट नहीं बैठता। और वह उस चीज़ की अभिव्यक्ति थी जो वस्तुतः असंभव थी। क्या फरीसियों ने सचमुच ऊँटों को पूरा निगल लिया था? अपच के बारे में बात करें।

यीशु के अनुयायियों ने कितनी बार शाब्दिक पहाड़ों को हिलाया? मैं यह नहीं कहूँगा कि भगवान ऐसा नहीं कर सकता। बाइबल भूकंप वगैरह के दौरान ईश्वर के ऐसा करने के बारे में बात करती है। लेकिन ये बातें अतिशयोक्तिपूर्ण थीं।

वे कुछ डालने के ग्राफिक तरीके थे। खैर, मैथ्यू 5.32 में तलाक की बात का संदर्भ अतिशयोक्तिपूर्ण है। समाधान याद रखें।

यदि कोई व्यक्ति वासना करता है, तो ठीक है, यदि तुम वासना करते हो, तो अपनी आँख निकाल लो। अधिकांश लोग इसे शाब्दिक रूप से नहीं लेते हैं। अधिकांश लोग अपनी आँखें नहीं निकालते।

वे बस यह मानते हैं कि वासना को रोकने के लिए हमें जो कुछ भी करना है, वह बेहतर है कि हम करें। इसलिए यदि कोई अपने कंप्यूटर पर पोर्नोग्राफी देख रहा है, तो यदि आपको कंप्यूटर से डिस्कनेक्ट करना है, तो बेहतर होगा कि आप ऐसा करें। उससे दूर जाने के लिए आपको जो भी करना पड़े, करें।

लेकिन आम तौर पर लोग इसे शाब्दिक रूप से नहीं लेते हैं और अपनी आँखें निकाल लेते हैं। ऐसी कहानी है कि ओरिजन, एक प्रारंभिक ईसाई नेता, ने वास्तव में अपनी युवावस्था में इसे शाब्दिक रूप से लिया और खुद को नपुंसक बना लिया। और आरंभिक चर्च में यह ठीक नहीं हुआ।

उन्हें यह पसंद नहीं आया. और फिर मुझे नहीं पता कि यह सच्ची कहानी है या नहीं, लेकिन अगर यह सच है, तो यह निश्चित रूप से स्पष्ट करेगा कि उसने अपना शेष जीवन बाइबल को शाब्दिक रूप से लेने के बजाय उसका रूपक बनाने में क्यों बिताया। लेकिन किसी भी मामले में, हम इसे शाब्दिक रूप से नहीं लेते हैं।

हम मानते हैं कि यह अतिशयोक्ति है। यह हमारा ध्यान आकर्षित करने का एक ग्राफिक तरीका है। इस परिच्छेद का भी यही संदर्भ है।

यीशु की अन्य शिक्षाएँ विवाह की विघटनशीलता को मानती हैं। यीशु ने स्त्री से यह नहीं कहा, ठीक है, तुम्हारी एक बार शादी हुई थी और तब से तुम पाँच लोगों के साथ रहती हो। बल्कि, वह कहते हैं, आपकी पांच बार शादी हो चुकी है लेकिन अब आप किसी और के साथ रह रहे हैं।

तो आप कह सकते हैं, ठीक है, उसका शाब्दिक अर्थ यह नहीं था। आप ऐसा कह सकते हो। लेकिन आप यह नहीं कह सकते कि दोनों अनुच्छेद शाब्दिक हैं।

दो अनुच्छेदों में से एक भी शाब्दिक नहीं हो सकता। या तो यीशु कहेंगे, पहली शादी के बाद, बाकी व्यभिचार थे, या ये विवाह थे। और जब वह व्यभिचार की बात कर रहा है, तो वह पुनर्विवाह के मामले में अतिशयोक्तिपूर्ण व्यवहार कर रहा है।

इसी प्रकार, मैथ्यू 5.32 और 19.9 में अपवाद खंड। यीशु कहते हैं, जो कोई अपनी पत्नी को बेवफाई के अलावा किसी और कारण से तलाक देता है। खैर, तलाक के मामलों में बेवफाई एक कानूनी आरोप था जो अक्सर सामने आता था। और कुछ लोगों ने पोर्निया, बेवफाई के अर्थ को सीमित करने की कोशिश की है।

लेकिन वास्तव में, यदि आपके पास संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो अर्थ को संकीर्ण करने का सुझाव देता हो, तो आपके पास अर्थ को संकीर्ण करने का कोई कारण नहीं है। इसका अर्थ है यौन अनैतिकता। यह वास्तव में मोड़किया से अधिक चौड़ा है।

यह वास्तव में व्यभिचार से अधिक व्यापक है, संकीर्ण नहीं। शम्माई के स्कूल में, जब वे आपकी शादी के प्रति बेवफा होने के बारे में बात कर रहे थे, अगर कोई पत्नी नग्न बालों के साथ सार्वजनिक रूप से बाहर जाती थी, उसने अपना सिर नहीं ढका हुआ था, तो वे इसे बेवफाई मानते थे। तो, यीशु कहते हैं, जो कोई अपनी पत्नी को बेवफाई के अलावा किसी और कारण से तलाक देता है, वह व्यभिचार कर रहा है।

खैर, प्राचीन परिभाषा के अनुसार तलाक का मतलब पुनर्विवाह की स्वतंत्रता था। वास्तव में इस शब्द का मतलब यही है। और इस तरह तलाक के अनुबंधों में इसका उपयोग किया गया।

सवाल तलाक की वैधता का था। यदि तलाक वैध था, तो पुनर्विवाह वैध था। यदि तलाक वैध नहीं था, तो पत्नी के मामले में, पुनर्विवाह वैध नहीं था।

पति के मामले में, यहूदी पुरुषों ने बहुविवाह की अनुमति दी, लेकिन इसका अभ्यास अक्सर नहीं किया जाता था। गैर-यहूदी दुनिया और प्रवासी भारतीयों में रहने वाले यहूदी लोगों में, इसकी कोई संभावना भी नहीं थी। इसलिए, किसी एक के लिए भी, वे वास्तव में पुनर्विवाह नहीं कर सकते थे जब तक कि तलाक वैध न हो।

लेकिन अगर यहां निर्दोष पक्ष को अपने जीवनसाथी की बेवफाई के कारण वैध रूप से तलाक दिया गया है, अगर निर्दोष पक्ष का विवाह दोषी पक्ष से नहीं हुआ है, तो प्रार्थना करें कि क्या दोषी पक्ष का विवाह अभी भी निर्दोष पक्ष से किया जा सकता है? इससे पता चलता है कि यदि यीशु कोई अपवाद बनाता है, तो संभवतः मूल कथन में अतिशयोक्ति का एक तत्व है। इसके अलावा,

पॉल एक और अपवाद को पहचानता है। यीशु कहते हैं कि आस्तिक अपने वफादार जीवनसाथी को तलाक देने या त्यागने के लिए स्वतंत्र नहीं है।

कोरिंथ में, सामान्य तौर पर ग्रीको-रोमन दुनिया में, विवाह से बाहर निकलने के लिए स्वचालित रूप से तलाक की आवश्यकता होती है। यदि कोई भी पक्ष विवाह से बाहर होना चाहता था, तो विवाह भंग कर दिया जाता था। इसे आपसी सहमति से एक साथ आयोजित किया गया था।

वह काम करने का ग्रीक और रोमन तरीका था। यह प्रवासी भारतीयों में काम करने का यहूदी तरीका भी था। तो, पॉल, वह इसे दोनों तरीकों से संबोधित करेगा, पति और पत्नी।

मार्क 10 भी ऐसा ही करता है। यीशु कहते हैं कि आस्तिक अपने वफादार जीवनसाथी को तलाक देने या त्यागने के लिए स्वतंत्र नहीं है। लेकिन पॉल इसे एक विशेष स्थिति मानते हैं।

खैर, अगर जीवनसाथी चला जाए तो क्या होगा? वह यहां विश्वासियों और अविश्वासियों के बारे में बात कर रहे हैं। वह मान रहा है कि आस्तिक यीशु द्वारा सिखाई गई बातों के कारण नहीं छोड़ेगा, या कम से कम निश्चित रूप से उसे नहीं छोड़ना चाहिए। लेकिन अगर दूसरा व्यक्ति चला जाए तो क्या होगा? ठीक है, यदि जीवनसाथी छोड़ देता है, तो पॉल 1 कुरिन्थियों 7.15 में कहता है, ऐसे मामलों में आस्तिक बंधन में नहीं है।

पुनर्विवाह की स्वतंत्रता के लिए प्राचीन यहूदी तलाक अनुबंधों में यही सटीक भाषा है। और हम यह जानते हैं क्योंकि हमारे पास प्राचीन यहूदी तलाक अनुबंध हैं जो जुडियन रेगिस्तान में पाए गए हैं। और इसलिए भी, क्योंकि हमारे पास ट्रेक्टेट गिटिन में प्राचीन यहूदी तलाक के बारे में सामग्री का एक पूरा संग्रह है।

मिश्राह गिटिन 9 विशेष रूप से तलाक के फार्मूले के बारे में बात करता है। यह कहना कि व्यक्ति अब स्वतंत्र है या बाध्य नहीं है। कभी-कभी इसे और अधिक पूर्ण रूप से वर्णित किया गया था, अब यह किसी भी पुरुष के लिए स्वतंत्र है, पत्नी किसी भी पुरुष से विवाह करने के लिए स्वतंत्र है।

इसलिए, यीशु ने जो कहा उसे पॉल सिद्धांत के एक सामान्य कथन के रूप में लेता है, जिस तरह हम एक कहावत को ले सकते हैं, उसे कुछ परिस्थितियों में योग्य होना होगा। परिश्रमी का हाथ धनवान बनाता है। खैर, पॉल मेहनती होकर जेल में काम नहीं कर रहा है और अमीर नहीं बन रहा है।

क्या इसका मतलब यह है कि उसके साथ कुछ गड़बड़ है? यह एक सामान्य सिद्धांत है। इसलिए, पॉल इसे सिद्धांत के एक सामान्य कथन के रूप में लेता है जो योग्य हो सकता है। नए नियम में तलाक के बारे में छह में से चार पाठ स्पष्ट रूप से अपवाद बनाते हैं।

क्या हम अपवादों की व्याख्या करते हैं या क्या हम मानते हैं कि ये अपवाद उस विचार की व्याख्या कर रहे हैं जो पहले से ही अधिक सामान्य सिद्धांत में मौजूद था? लेकिन यहां ध्यान रखें कि यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो हर तरह की स्थिति को कवर करती हो। मैथ्यू और पॉल के अपवादों में जो समानता है वह यह है कि आस्तिक विवाह तोड़ने वाला नहीं है। दूसरा व्यक्ति यौन

रूप से बेवफाई करके शादी को तोड़ रहा है, यह नहीं कह रहा है कि आपको उस स्थिति में तुरंत तलाक लेना होगा।

लेकिन यदि व्यक्ति लगातार बेवफा हो रहा है और उस दिन वापस आ गया है, तो कानून के अनुसार, आपको ऐसा करना चाहिए था, हालांकि इसे हमेशा लागू नहीं किया गया था। लेकिन यदि आपका जीवनसाथी आपके प्रति बेवफाई कर रहा है, यदि आपका जीवनसाथी विवाह छोड़ देता है, तो आप उन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकते। इसलिए जब पॉल कहता है कि आस्तिक ऐसे मामलों में बंधन में नहीं है, हाँ, आस्तिक स्वतंत्र है।

आस्तिक ने शादी नहीं तोड़ी. अब, कभी-कभी कुछ विश्वासी किसी को दूर कर देते हैं, ऐसी स्थिति में आप विवाह तोड़ने में मदद करते हैं। लेकिन आस्तिक को हमारी शादी को बचाने के लिए, हमारी शादी को सफल बनाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

और अपवादों की बात उस व्यक्ति के लिए है जो विवाह नहीं तोड़ रहा है, वह व्यक्ति जो विवाह के प्रति वफादार है। अब, पॉल ने सादृश्य के आधार पर एक अपवाद बनाया, यह समझने के आधार पर कि यीशु का वास्तव में क्या मतलब था। समान रूप से, यदि हम पॉल के मॉडल का अनुसरण करते हैं, तो हमें आज दुर्व्यवहार जैसी किसी चीज़ के लिए अपवाद बनाना पड़ सकता है।

यदि पति अपनी पत्नी को पीट रहा है, यदि पत्नी अपने पति की कॉफी या चाय में आर्सेनिक या अन्य प्रकार का जहर डाल रही है, तो इस प्रकार की चीज़ें उन्हें अलग करने का एक कारण हो सकती हैं। और ये भी ऐसी चीज़ें हैं जो विवाह अनुबंध को तोड़ती हैं। लेकिन हम इसे किसी भी चीज़ की तरह नहीं बनाना चाहते।

खैर, उसने मुझे गुदगुदी की और मुझे गुदगुदी या ऐसा कुछ पसंद नहीं है। लोग तरह-तरह की बातें करेंगे जैसे, अच्छा, उन्होंने मेरे साथ दुर्व्यवहार किया है। हमें अपनी शादी को सफल बनाने और अपनी शादी को फलने-फूलने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

अपवादों को अपवाद ही माना जाता है न कि हमारी शादी के प्रति वफादार रहने के बारे में अतिशयोक्ति की बात को कम करने के लिए। मरकुस 10 और पद 11 ऐसे बोलते हैं मानो विवाह अविभाज्य है। यदि आप किसी और से विवाह करते हैं, तो आप व्यभिचार कर रहे हैं।

लेकिन मरकुस 10 और श्लोक 9 मानता है कि यह वास्तव में घुलनशील है। ऐसा नहीं है कि इसे खत्म कर देना ठीक है, बल्कि यह कि जो शादी एक बार टूट गई वह वास्तव में टूट गई है। वह कहता है, इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई अलग न करे।

वह यह नहीं कहते कि इसे अलग नहीं किया जा सकता। वह कहता है, इसे अलग मत रखो। इसलिए मुझे लगता है कि तलाक पर यीशु की समग्र शिक्षा इसे योग्य बनाती है और हमें दिखाती है कि अतिशयोक्ति करना संभव है, इस विचार को अलग नहीं किया जा सकता है।

दोनों मामलों में मुद्दा यह नहीं है कि इसे भंग नहीं किया जा सकता, बल्कि यह है कि इसे भंग नहीं किया जाना चाहिए। इसे भंग नहीं किया जाना चाहिए, कम से कम आस्तिक की ओर से, आज्ञाकारी आस्तिक की ओर से। भाषा का अलंकारिक कार्य मांग है।

विवाह को सुरक्षित रखें। यह कोई लौकिक नियम नहीं है कि विवाह टूटने पर भी वह वास्तव में बरकरार रहता है और हमें नई शादियां तोड़नी पड़ती हैं। अब, मैं जानता हूँ कि कुछ संस्कृतियों में यह मुद्दा दूसरों की तुलना में अधिक प्रासंगिक है, लेकिन आज भी ऐसी संस्कृतियां हैं जहां अक्सर ऐसे पति-पत्नी होते हैं जो बेवफा हो जाते हैं।

कभी-कभी वे आस्था से दूर चले जाते हैं। कभी-कभी ये जीवनसाथी से दूर चले जाते हैं। और हमें इसे ध्यान में रखना होगा।

और साथ ही, मैं इसका और अधिक उल्लेख बाद में करूंगा जब हम मैथ्यू 19 पर पहुंचेंगे, लेकिन रब्बियों के बीच दो लोग थे जो दो विचारधाराओं के थे। एक विचारधारा शम्माई की विचारधारा थी, जिसमें कहा गया था कि यदि आपकी पत्नी बेवफा है, तो आप उसे तलाक दे सकते हैं। हिलेल के स्कूल ने कहा कि अगर आपकी पत्नी टोस्ट जलाती है तो आप उसे तलाक दे सकते हैं।

इस विशेष मुद्दे पर, लोगों का टोस्ट जलाना प्रबल प्रतीत होता है क्योंकि जोसीफस और फिलो भी, आप जानते हैं, किसी भी कारण से तलाक की बात करते हैं। यीशु किसी भी कारण से तलाक में विश्वास नहीं करते। यीशु चाहते हैं कि हम अपने विवाहों के प्रति वफादार रहें।

तो, अघुलनशील और अघुलनशील, आप उन्हें एक साथ रख दें। और यहूदी शिक्षण तकनीकों के प्रकाश में, कई विद्वान जो यहूदी शिक्षण तकनीकों से परिचित हैं, कहते हैं, ठीक है, यीशु का इरादा शायद इसे हलाकिक की तुलना में अधिक हगाडिक बनाना था। यह एक कानून के रूप में अभिप्रेत नहीं है।

यह एक ऐसे सिद्धांत के रूप में अभिप्रेत है जिसे हमें हमेशा ध्यान में रखना होगा। यीशु यह भी चेतावनी देते हैं कि शपथ ईमानदारी का घटिया विकल्प है। टोरा झूठी शपथों के विरुद्ध चेतावनी देता है, और भगवान का नाम व्यर्थ में लेने के विरुद्ध चेतावनी देता है।

जब आप शपथ लेते हैं तो आप किसी देवता का आह्वान कर रहे होते हैं। तुम कह रहे हो, ठीक है, भगवान मेरा गवाह है कि यह सच है। या यदि आप गैर-यहूदी होते, तो आप किसी विशेष देवता का नाम लेते और कहते, आप जानते हैं, वह देवता मेरा गवाह है।

अंग्रेजी में आज भी कभी-कभी हम क्रॉस माई हार्ट एंड होप टू डाई की बात करते हैं। मूलतः, आप क्या कह रहे हैं जब आप कहते हैं कि ईश्वर मेरा गवाह है, यदि मैं सच नहीं बोल रहा हूँ और मैं ईश्वर का नाम ले रहा हूँ, तो ईश्वर जानता है कि मैंने बस उसके नाम का अनादर किया है और ईश्वर मुझे उसके नाम का अनादर करने के लिए दंडित करेगा। इसलिए, यदि लोग किसी ईश्वर में विश्वास करते हैं तो वे आमतौर पर उस तरह से ईश्वर का आह्वान करने से डरते थे।

तो, जो अधिकांश लोगों ने किया। शपथ ग्रहण पर विभिन्न यहूदी विचार थे। जोसेफस और फिलो ने एस्सेन्स की प्रशंसा की, जो एक बहुत ही सख्त समूह था क्योंकि उनमें इतनी ईमानदारी थी कि उन्हें किसी शपथ की आवश्यकता नहीं थी।

और ऐसा प्रतीत होता है कि वे एस्सेन्स को पाइथागोरस नामक यूनानी दार्शनिक संप्रदाय के समान चित्रित कर रहे थे। पाइथागोरस लोग शपथ नहीं लेते थे। उन्होंने बिल्कुल सच कहा।

जीसस कहते हैं, तुम्हारी हां को हां की तरह काम करने दो, तुम्हारी ना को ना की तरह काम करने दो। बस अपनी बात के प्रति इतने सच्चे रहें कि चाहे कुछ भी हो, लोग आप पर भरोसा कर सकें। उत्तरी नाइजीरिया के मेरे एक बहुत करीबी दोस्त ने मुझे बताया कि एक पीढ़ी पहले, जब वह छोटा था, अगर एक ईसाई ने गवाह के रूप में अदालत में कुछ कहा, तो मामला सुलझ गया क्योंकि ईसाई हमेशा सच बोलने के लिए जाने जाते हैं।

ईसाई अल्पसंख्यक थे। लेकिन पहली बार जब एक ईसाई ने शपथ के तहत झूठ बोला, तो इसने मामले को हिलाकर रख दिया। और उन्होंने कहा, आज बहुत से ईसाई सही आचरण नहीं कर रहे हैं।

लेकिन जब ईसाई वैसा व्यवहार करते हैं जैसा ईसाइयों को करना चाहिए, जैसे कि हम यीशु की शिक्षाओं का पालन करते हैं, ईमानदारी के साथ चलते हैं, तो लोग सीखेंगे कि हम भरोसेमंद हैं। अब, इन शपथों के साथ, लोग कभी-कभी कसम खाने के लिए k'nuyim, सरोगेट वस्तुओं का उपयोग करते हैं। और भगवान के नाम से जितना दूर हो उतना अच्छा है।

अरे, आप भगवान की शपथ नहीं लेना चाहेंगे यदि आप गलती से अपनी शपथ पूरी नहीं कर पाते या गलती से शपथ तोड़ देते हैं। ईश्वर के नाम की कसम न खाना बेहतर है, किसी और चीज की कसम खाना बेहतर है। स्वर्ग की कसम।

या इससे भी बेहतर, अपने सिर के बालों की कसम खाओ। क्योंकि यदि आप कानून का उल्लंघन करते हैं, तो आपके सिर पर बाल आपको परेशान नहीं करेंगे। और हममें से कुछ लोगों के सिर पर वास्तव में इतने बाल झड़ गए हैं कि इसकी शपथ लेना लगभग अप्रभावी हो सकता है।

लेकिन किसी भी मामले में, यीशु कहते हैं, आप ऐसा नहीं कर सकते। क्योंकि जो कुछ तुम शपथ खाते हो वह परमेश्वर का है। आप जिसकी भी शपथ खाते हैं वह ईश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ है।

और इसलिए अंततः, यह वापस भगवान की ओर संकेत कर रहा है। एक आस्तिक के विश्वदृष्टिकोण के लिए कुछ भी पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष नहीं है। क्योंकि हम मानते हैं कि ईश्वर ही हर चीज़ का असली स्वामी है।

अब, अविश्वासी उस पर विश्वास नहीं करेंगे। हम इसे उन पर थोपते नहीं हैं। लेकिन यीशु के अनुयायियों के रूप में हम इसी पर विश्वास करते हैं।

मैथ्यू के भीतर हमारे पास इसके उदाहरण हैं। हेरोदेस एंटीपास शपथ लेता है और अपनी शपथ पूरी करने के लिए उसे जॉन द बैपटिस्ट को मारना पड़ता है। पतरस शपथ खाता है, इस बात से इनकार करता है कि वह यीशु को जानता है।

और उसे भी बहुत नकारात्मक ढंग से चित्रित किया गया है। इसलिए, मैथ्यू के सुसमाचार में भी हमारे पास सिद्धांत के उदाहरण हैं। प्रतिशोध और प्रतिरोध से बचना, 5:38 से 42 तक।

खैर, बदला लेने से बचना। और निस्संदेह, लैव्यव्यवस्था 19 हमें बताती है कि हमें बदला लेने से बचना चाहिए। लेकिन यह आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत, जिसे लैटिन से लेक्स टैलियोनिस कहा जाने लगा है, यह प्राचीन निकट पूर्वी में मानक अभ्यास था, या आज हम प्राचीन मध्य पूर्वी कानून कह सकते हैं।

आपके पास यह 1900 ईसा पूर्व के हम्मूराबी के कोड या कानूनी संग्रह में है, कुछ इस तरह। यह आपके पास कई प्राचीन कानूनी संग्रहों में है। और विचार यह था कि, यदि कोई आपकी आंख निकाल लेता है, तो आप उसे न्यायाधीश के पास ले जाएं, यह मानते हुए कि आप ऐसा करने की किसी भी स्थिति में हैं, और न्यायाधीश उसकी आंख निकाल लेगा।

हालाँकि वे आर्थिक जुर्माना अदा कर सकते हैं और इससे छुटकारा पा सकते हैं। लेकिन अंतर यह है कि, पुराने नियम में जहां आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत होता है, यह सिर्फ हर किसी के लिए कहा गया है, या हर कोई स्वतंत्र है। उनमें वह विशिष्टता थी।

लेकिन प्राचीन निकट पूर्वी कानून में, अन्यत्र, यह वर्ग पर आधारित था। इसलिए, यदि आप उसी सामाजिक वर्ग के किसी व्यक्ति की आंख फोड़ देते हैं, तो आपकी आंख फोड़ दी जाती है, इत्यादि। यदि आप निम्न सामाजिक वर्ग के किसी व्यक्ति की आंख फोड़ते हैं, तो सामाजिक वर्ग के आधार पर जुर्माना कम होता है, इत्यादि।

तो, निर्गमन में हमारे पास वास्तव में एक सुधार है, आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत, आसपास के कानूनों में सुधार। और उन कानूनों में भी सुधार होना था क्योंकि इसका मतलब था कि सज़ा अपराध के अनुरूप होनी चाहिए। इसे अपराध से बड़ा होने की अनुमति नहीं थी।

तो, ये चीजें सुधार थीं। और नागरिक कानून यही करता है। नागरिक कानून पाप को सीमित करता है।

लेकिन यीशु उससे भी आगे निकल जाते हैं। वह कहता है, बदला भी मत लेना. बात को अदालत में भी मत ले जाओ.

कोई तुम्हारी आंख फोड़ देता है. खैर, वह आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत जैसे पाठ के बारे में बात करते हैं। फिर वह दूसरा गाल आगे करके किसी और बात का उदाहरण देता है।

लेकिन यीशु पुराने नियम को रद्द नहीं कर रहे हैं। इसके बजाय, वह कह रहा है, इस कानून का उपयोग न करें। वह यह नहीं कह रहा है कि यह सच नहीं है, यह उचित नहीं है।

वह कह रहा है, इसका उपयोग मत करो। और ऐसे दार्शनिक और यहूदी संत भी थे जो प्रतिशोध से बचने की बात करते थे। आपके पास निर्गमन 23 और लैव्यव्यवस्था 19 में यह उसी संदर्भ में है जैसे अपने पड़ोसी से प्रेम करना।

प्रतिशोध से बचें। लेकिन यीशु जो उदाहरण देते हैं वह दूसरा गाल आगे करने का उदाहरण है। और जब आप दूसरा गाल घुमा रहे थे, तो उसका संदर्भ, वास्तव में, अक्सर लेक्स टैलियोनिस, आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत, और अन्य प्राचीन निकट पूर्वी कानूनी संग्रहों से जुड़ा होता है।

और इसलिए, यह कभी-कभी उससे जुड़ा होता था। लेकिन यह सम्मान और शर्म की बात थी। और इसे आम तौर पर आर्थिक जुर्मनि से दंडित किया जाता था।

लेकिन जब कोई आपके गाल पर मारता है, तो इसका मतलब आपके दांत तोड़ना नहीं है। इस संस्कृति में, ऐसा लगता है जैसे कुछ पुरानी फिल्मों और कुछ संस्कृतियाँ हैं जहाँ कोई व्यक्ति दस्ताना लेकर आपके गाल पर थप्पड़ मार सकता है। यह ऐसा है जैसे मैं तुम्हें द्रुव युद्ध के लिए चुनौती दे रहा हूँ।

यह आपके सम्मान को चुनौती थी। यह आपके सम्मान का अपमान था। यह गाल पर एक जोरदार तमाचा था।

जब यह कहता है कि दूसरा गाल भी उनकी ओर कर दो, तो आप कह रहे हैं, मैं अपने सम्मान की रक्षा नहीं करने जा रहा हूँ। एक तरह से, इसे प्रतिरोध के एक रूप के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि आप कह रहे हैं, मैं आपकी राय को इतना महत्व नहीं देता कि मैं वास्तव में अपमानित हूँ क्योंकि मुझे केवल मेरे बारे में भगवान की राय की परवाह है। लेकिन यह अपने दुश्मन से प्यार करने का भी एक रूप है।

पैगम्बरों को इसका सामना करना पड़ा। यशायाह 50 और आयत 6 में गाल पर प्रहार किए जाने की बात कही गई है। 1 किंग्स 22 में मीकाया के गाल पर मारा गया है।

यीशु हमें चुनौती दे रहे हैं कि हम अपने सम्मान की रक्षा न करें बल्कि अपना सम्मान परमेश्वर के हाथों में छोड़ दें। इसमें से कितनी अतिशयोक्ति है? खैर, अतिशयोक्ति का उद्देश्य हमारा ध्यान आकर्षित करना और हमें विचारशील बनाना है। तो, मैं आपको विचार करने दूँगा क्योंकि मुझे यकीन नहीं है कि हम सभी को ठीक-ठीक पता होगा कि एक ही स्थान पर रेखा कहाँ खींचनी है।

लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, इनमें से कुछ और अधिक चुनौतीपूर्ण होते जाएंगे। वह कहते हैं, यदि कोई तुम्हें अदालत में ले जाना चाहता है और तुम्हारा लबादा लेना चाहता है या यदि कोई आपका लबादा चुराना चाहता है, तो उसे छोड़ दो, श्लोक 40। और कई किसानों के पास, कम से कम मिस्र में, केवल एक लबादा था।

यहूदिया और गलील में इससे अधिक होना आम बात रही होगी। लेकिन कई किसानों के पास केवल एक ही लबादा था। व्यवस्थाविवरण 24 में यहूदी कानून ने जिस एक कब्जे को विशेष रूप से जब्ती से छूट दी थी वह बाहरी लबादा था क्योंकि आप रात में सोने के लिए इसी का उपयोग करेंगे।

यह आपका कंबल था. इस तरह आप रात में गर्म रहते थे। ठीक है, यदि वह व्यक्ति आपका बाहरी वस्त्र ले लेता है, तो आगे बढ़ें और उसे अपना आंतरिक वस्त्र भी दे दें।

यदि आप उन दोनों को दे दें तो क्या होगा? आप नग्न होंगे और उन्हें शायद खेद होगा। लेकिन किसी भी मामले में, यीशु कह रहे हैं, बस उनके साथ सहयोग करें। वे ये चीजें चाहते हैं, उन्हें ये चीजें लेने दीजिए।

ये वो चीजें नहीं हैं जो मायने रखती हैं. भगवान के साथ आपका रिश्ता क्या मायने रखता है। वह अध्याय छह में बात करने जा रहा है, आप जानते हैं, आकाश के पक्षियों के बारे में, वे इस बात की चिंता नहीं करते कि वे क्या खाएंगे या क्या पहनेंगे।

तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनका भरण-पोषण करता है। इसलिए, हमें संपत्ति के लिए लोगों से संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम भगवान पर निर्भर हैं। और यदि ये लोग इन चीजों को लेते हैं, ठीक है, और फिर से, तो आप इसे कितनी दूर तक आगे बढ़ाएंगे? अगर कोई कुछ करता है तो क्या आप उसे अदालत में ले जाएंगे? एक बार जब हम इसका अध्ययन कर रहे थे तो मेरा एक छात्र मेरे पास आया और एक वाहन दुर्घटना हो गई।

किसी ने उससे मुलाकात की थी और उसे यकीन नहीं था कि उसे अपनी बीमा कंपनी को नुकसान का भुगतान करने के लिए अपनी बीमा कंपनी के पास जाने देना चाहिए। और मैंने कहा, नहीं, हमारी संस्कृति में बीमा इसी के लिए है। मुझे लगता है कि ऐसा करना बिल्कुल ठीक है।

लेकिन मुद्दा यह है कि बदला न लें और अपने दुश्मन से प्यार करें और जहां तक समझदारी हो सहयोग भी करें, जिससे समस्या का समाधान नहीं होगा। लेकिन फिर भी यीशु के कहने से समस्या पूरी तरह से हल नहीं होती है क्योंकि हमारे पास बहुत सारी अलग-अलग स्थितियाँ हैं। वह हर स्थिति को कवर नहीं कर सकता।

इसलिए, वह हमें सिद्धांत देते हैं, जो कभी-कभी अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से कहे जाते हैं। अपने उत्पीड़कों से प्रेम करो, पद 41। यहूदिया और गलील में कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्हें वास्तव में यह पसंद नहीं आएगा कि यीशु इस बारे में क्या कह रहे थे।

और आप समझ सकते हैं क्यों. यीशु सक्रिय रूप से सहयोग करने का विरोध न करने से भी आगे निकल जाते हैं। कब्ज़ा करने वाली शक्ति, रोमन सेना के सैनिक, जिनमें से अधिकांश स्थानीय रूप से सीरियाई सहायक रंगरूट थे।

लेकिन सैनिक चीजों की माँग कर सकते थे। वे कह सकते हैं, ठीक है, ठीक है, मैं चाहता हूँ कि आप इसे मेरे लिए ले जाएं या मैं चाहता हूँ कि आप मुझे अपना गधा उधार दें ताकि मैं इसे ले जा

सकूं या मुझे सर्दियों के दौरान आपके घर में रहना होगा, कुछ इस तरह। सैनिकों को सरकार द्वारा दिए गए इस कानूनी अधिकार का दुरुपयोग करने के लिए जाना जाता है।

तो हमें व्यवहार में कहां तक सहयोग करना चाहिए? यीशु कहते हैं कि कोई चाहता है कि आप किसी चीज को एक मील तक ले जाएं, दो मील तक ले जाएं, बस उन्हें यह दिखाने में पूरी ताकत लगा दें कि आप सहयोग कर रहे हैं और आप उनसे परेशान नहीं हैं, बल्कि आप बस उनसे प्यार कर रहे हैं। अपने प्रकाश को चमकने दो। हम इसे कितनी दूर तक आगे बढ़ाएंगे? ठीक है, अगर हम व्यवहार में यीशु को देखते हैं या हम अभ्यास में पॉल को देखते हैं, तो मेरा मतलब है, जब कोई जॉन 18 में यीशु के गाल पर वार करता है, तो यह मैथ्यू के सुसमाचार में नहीं है, लेकिन कोई यीशु के गाल पर वार करता है, यीशु जवाब देता है।

वह कहता है, मैंने क्या किया है? और जिस तरह से वे व्यवहार कर रहे हैं उसकी वैधता को चुनौती देते हैं। जब प्रेरितों के काम 23 में महायाजक ने पॉल को गाल पर मारने का आदेश दिया, तो पॉल ने जवाब दिया, हे सफेदी वाली दीवार, भगवान तुम्हें मारेंगे। तो, यहाँ अतिशयोक्ति का एक तत्व है।

मेरा मतलब है, इससे पहले भी मैथ्यू अध्याय 23 में यीशु ने किसी को भी मूर्ख नहीं कहा था, क्या लगता है? यीशु फरीसियों से बात कर रहे हैं। वह कहता है, तुम अंध मूर्खों! तो, इसमें अतिशयोक्ति का एक तत्व है, लेकिन फिर भी, इसका उद्देश्य हमारा ध्यान आकर्षित करना है, और हमें दयालु व्यक्ति बनाने के अपने तरीकों पर विचार करना है, यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जो हमारे प्रति दयालु नहीं हैं।

अब, एक और सवाल जो उठता है वह यह है कि क्या यह व्यक्तिगत उत्पीड़कों या राष्ट्रीय उत्पीड़कों के बारे में बात कर रहा है। इस पर ईसाइयों में मतभेद है। और यदि यह राष्ट्रीय है, तो क्या इसका मतलब यह होगा कि राष्ट्र को इसमें शामिल नहीं होना चाहिए या हम ईसाइयों को इसमें शामिल नहीं होना चाहिए? ये ऐसे प्रश्न हैं जिन पर ईसाइयों ने सदियों से बहस की है।

और मैं उन प्रश्नों का समाधान नहीं करने जा रहा हूँ जिन पर सदियों से ईसाइयों ने बहस की है। लेकिन मैं आपको एक ऐसा मामला बता सकता हूँ जहां इसने मुझे सचमुच बहुत चुनौती दी है। आप जानते हैं, धर्म परिवर्तन से पहले मैं नास्तिक था।

और जब मैंने चमत्कारों पर अपनी किताब लिखी, तो इंटरनेट पर कुछ नास्तिक थे। सभी नास्तिक नहीं, लेकिन कुछ कट्टरपंथी नास्तिकों ने नए नास्तिकों को बुलाया जिन्होंने पुस्तक को गलत तरीके से प्रस्तुत किया। उन्होंने मेरे बारे में बुरी बातें कही।

और मैं बस उनसे प्यार करता था। मैं उनसे प्यार किये बिना नहीं रह सका। मैं नास्तिक हुआ करता था।

मुझे इस बात से सहानुभूति हो सकती है कि वे कहाँ से आ रहे थे, हालाँकि मैं बेहतर जानता था क्योंकि मैं प्रभु को जानता था। लेकिन मुझे एक अलग तरह की समस्या थी। मुझे और मेरी पत्नी

को जातीय सुलह पर बात करने जाना था, मेरा मानना है कि कोटे डी आइवर में 1700 पादरी थे, ठीक उसके बाद जब वहां गृह युद्ध हुआ था।

और यह युद्ध धार्मिक आधार पर नहीं था. यह एक जातीय युद्ध था. लेकिन मुझे एक समस्या थी.

मुझे वास्तव में यह हिस्सा महसूस नहीं हुआ जहां मैं अपने दुश्मनों से प्यार करने की बात कर रहा था। मुझे यह बिल्कुल भी महसूस नहीं हुआ. मैं ईसाइयों के बीच जातीय मेल-मिलाप के बारे में बात करने का आदी था, लेकिन मुझे ऐसा महसूस नहीं हुआ।

अटलांटिक के आधे रास्ते में, मुझे एहसास हुआ कि भगवान ने मुझे दोषी ठहराया कि दुश्मनों से प्यार करने के बारे में बात करना मुझे अच्छा नहीं लगता, क्योंकि मैं अपने दुश्मनों से प्यार नहीं करता था। और मेरे मन में जो दुश्मन थे, उनमें नाइजीरिया के मध्य बेल्ट में मेरे कुछ दोस्त जिहादियों के हमलों का शिकार हुए थे। मेरे कुछ दोस्त तीन दिनों तक बिना पानी और एक लाश के चर्च में फंसे रहे क्योंकि बाहर जिहादी चर्च पर हमला कर रहे थे।

मैं मुसलमानों को नापसंद नहीं करता था, लेकिन जिहादी, जिस तरह के लोगों ने मेरे दोस्तों को मारने की कोशिश की थी और कई ईसाइयों को मार डाला था, शुरू में बिना किसी उकसावे के, मेरा मतलब है, अंततः कुछ युवा ईसाइयों ने जवाबी हमला करना शुरू कर दिया और दूसरा गाल नहीं घुमाया। और दुर्भाग्य से, वे जिहादियों के अलावा अन्य लोगों को भी मार रहे थे, जो किसी की भी शर्तों पर उचित नहीं है। लेकिन शुरू में, जो लोग ऐसा कर रहे थे वे सिर्फ ईसाइयों का अकारण कत्लेआम कर रहे थे और उदारवादी मुसलमानों का भी कत्लेआम कर रहे थे।

मुझे इन लोगों से प्यार नहीं था. और मैंने इन लोगों के प्रति अपनी घृणा को उचित ठहराया, और प्रभु ने मुझे दोषी ठहराया। और मैंने कहा, हे प्रभु, यह व्यावहारिक नहीं है।

मेरा मतलब है, आपको जवाबी हमला करने में सक्षम होना होगा। लेकिन मुद्दा व्यावहारिकता का नहीं था. और मुद्दा यह नहीं कह रहा था कि किसी की स्थिति क्या होनी चाहिए, जैसे लोगों को हिंसा करने से रोकने के लिए पुलिस कार्रवाई।

मुद्दा यह था कि क्या मुझे अपने दिल में उनसे नफरत करने की इजाजत थी? या क्या मुझे उनसे अपने दिल में प्यार करना था? और मुद्दा यह नहीं था कि करने के लिए सबसे व्यावहारिक चीज़ क्या है? मेरा मतलब है, अहिंसक प्रतिरोध, मार्टिन लूथर किंग जूनियर के साथ काम किया। इसने गांधी के साथ काम किया। इतिहास में कुछ अन्य स्थान भी हैं जिनका मैं उल्लेख नहीं करूंगा। कुछ अन्य स्थानों के सम्मान में जहां यह काम नहीं करता था।

और मुद्दा यहां यह नहीं था कि दुश्मन को बदलने के संदर्भ में यह काम करता था या नहीं। मुद्दा यह था कि, यदि मैं यीशु का शिष्य हूँ, तो यीशु ने क्या किया? जब यीशु क्रूस पर चढ़े और हमारे लिए मरे तो उन्होंने अपने शत्रुओं से प्रेम किया। क्योंकि जब हम उसके शत्रु थे, तब उस ने हमारे लिये अपना प्राण दे दिया।

और कुछ के लिए, इसने काम किया, हमें अपने पास लाया। कुछ लोग उसके दुश्मन बने रहे, लेकिन उसने हमारे लिए अपनी जान दे दी। और इसलिए, मैं अपने दिल में नफरत नहीं रख सकता।

और जब मैंने पश्चाताप किया, तब मैं जाकर ईमानदारी से वह संदेश बोलने में सक्षम हुआ जो प्रभु ने मुझे दिया था। अब, सामाजिक स्थितियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर भिन्न हो सकती हैं। मैं आपको यह सलाह नहीं देने जा रहा हूँ कि आपकी संस्कृति में चीजें कैसे की जानी चाहिए।

लेकिन हमें अपने उत्पीड़कों से प्यार करने की ज़रूरत है। विवरण अतिशयोक्तिपूर्ण हो सकता है, लेकिन प्रेम का सिद्धांत प्रबल होना चाहिए। प्यार किसी पड़ोसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता है, और जब हम ऐसा कर सकते हैं तो प्यार पड़ोसी को नुकसान से बचाता भी है।

हमारे पास जिहादियों और अन्य लोगों की कई कहानियाँ हैं जो वास्तव में विश्वास में आ गए हैं क्योंकि उन्हें सच्चाई का एहसास हुआ है और अब वे मसीह में हमारे भाई और बहन हैं। संपत्ति का समर्पण, श्लोक 42. यहूदी धर्म में भिखारी और दान आम बात थी, लेकिन उनमें उच्च कार्य नीति भी थी।

इसलिए लोगों ने काम को महत्व दिया। आम तौर पर लोग भीख नहीं मांगते थे अगर उन्हें इसकी ज़रूरत नहीं होती। इसलिए, जब हम उस संस्कृति में भीख मांगने वाले लोगों के बारे में बात करते हैं, तो ऐसा नहीं था, मेरी संस्कृति में, मुझे प्रार्थना करनी पड़ती है कि कहां देना है।

क्योंकि एक बार जब आप एक जगह दे देते हैं, तो वे अक्सर आपका पता कई अन्य जगहों को बेच देते हैं, और हर कोई आपसे चीज़ें मांगता है, और उनमें से सभी उनका सही तरीके से उपयोग नहीं कर रहे हैं। लेकिन किसी भी मामले में, यहूदी धर्म में भिक्षावृत्ति और दान आम बात थी, लेकिन उच्च कार्य नीति थी। लेकिन क्या आप अपनी सारी संपत्ति छोड़ देते हैं, श्लोक 42, और फिर स्वयं एक सड़क पर चलने वाले व्यक्ति बन जाते हैं, उन सनकी लोगों की तरह जो यूनानी शहरों में सड़कों पर भीख मांगते थे? यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप भिखारी न बनें, यहूदी धर्म आम तौर पर दान को दशमांश से परे 20% तक सीमित कर देता है।

जब आप यीशु की जीवनशैली को देखते हैं, यीशु, तो सीमाएं थीं। मेरा मतलब है, उन्हें भीड़ से दूर जाना था, अपने शिष्यों को भीड़ से दूर ले जाना था, क्योंकि मानवीय तरीके से जो किया जा सकता है उसकी सीमाएं हैं। परन्तु यीशु ने दिया और दिया और दिया।

उन्होंने दूसरों की खातिर बलिदान दिया। तो, सीमाएं हैं, लेकिन अंततः हमें ऐसे लोग बनने की ज़रूरत है जो दे रहे हैं और जो लोग संपत्ति को जितना महत्व देते हैं उससे अधिक दूसरे लोगों को महत्व देते हैं। मुझे लगता है कि यही मुद्दा है।

श्लोक 43 से 48, अपने शत्रुओं से प्रेम करो। खैर, मेरा मानना है कि यीशु सभी प्रकार के शत्रुओं को संबोधित करते हैं, व्यक्तिगत और राष्ट्रीय। और वह एक शतपति से प्रेम दिखाता है।

अब ल्यूक के सुसमाचार में, आपको इस बारे में और अधिक पता चलता है कि सेंचुरियन प्यारा क्यों था, लेकिन मैथ्यू हमें यह नहीं बताता है। और मैथ्यू यहूदी विश्वासियों के लिए लिख रहा है। यदि वह 70 के बाद यहूदी विश्वासियों के लिए लिख रहा है, जैसा कि मेरा मानना है, या यदि वह 70 से पहले के यहूदी विश्वासियों के लिए लिख रहा है, जैसा कि 70 की ओर तनाव बढ़ रहा है, यहूदी लोगों के पास कारण था, विशेष रूप से यहूदियों और गैलिलियों के पास, रोमन या उसके सदस्यों को पसंद न करने का कारण था। रोमन सेना।

और यरूशलेम के साथ जो हुआ उसके बाद, साम्राज्य के आसपास के यहूदी लोगों के पास रोमन सेना के बारे में बहुत सहज महसूस नहीं करने के कारण थे। कुमरान, मृत सागर स्क्रॉल, आपके दुश्मनों से नफरत करने की बात करता है, लेकिन यीशु अपने दुश्मनों से प्यार करने की बात करते हैं। और चाहे वह व्यक्तिगत रूप से कोई ऐसा व्यक्ति हो जो आपको पसंद नहीं करता हो या कोई ऐसा व्यक्ति हो जो उस समूह से संबंधित हो जिसे आप पसंद नहीं करते हैं या वह आपके समूह को पसंद नहीं करता है, आपको वैसे भी उनसे प्यार करने की ज़रूरत है।

और मैं ऐसी स्थितियों में रहा हूँ। और कभी-कभी यह सुसमाचार के लिए होता है। एक बार मैं दूसरे प्रोफेसर के साथ था और हम थे, और वह छात्रों को बाइबल के विरुद्ध पढ़ा रहे थे, मैं छात्रों को बाइबल के बारे में पढ़ा रहा था, और यह छात्रों के लिए रस्साकशी की तरह बन गया।

और मैं युद्ध की रस्साकशी से पीछे हटना चाहता था, परन्तु एक कहावत है, कि जो धर्मी दुष्टों के साम्हने रास्ता छोड़ देता है, वह अशुद्ध कुएं के समान है। इसलिए, छात्रों की खातिर, मैं वहीं रुका रहा। लेकिन मैंने यह भी प्रार्थना की कि इस मामले में यह कहावत भी चरितार्थ हो कि ईश्वर अपने शत्रुओं को भी अपने साथ मेल कराता है।

और भगवान ने वैसा ही किया। और यह आदमी और मैं दोस्त बन गये। और आखिरकार, भगवान ने इसकी व्यवस्था भी की ताकि छात्र बाइबल के पक्ष में आँ और यह आदमी ऐसा कहे, अच्छा, यह कैसे हुआ? क्योंकि वह वास्तव में था, उसके पास मुझसे अधिक शिक्षण अनुभव था।

लेकिन किसी भी मामले में, हम दोस्त बन गए। इसलिए इसकी गारंटी नहीं है कि हमेशा ऐसा ही होगा। लेकिन हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करने के लिए बुलाया गया है, चाहे हमारे शत्रुओं का कारण कुछ भी हो।

यदि आप ऐसी संस्कृति से हैं जहाँ लोग शाप देने का अभ्यास करते हैं और लोगों ने आपको शाप दिया है, तो मुझे इसके बारे में बहुत दिलचस्प बात पता चली क्योंकि मेरी पत्नी उस संस्कृति से है जहाँ कुछ लोग ऐसा अभ्यास करते हैं और वे हमारे प्रति ऐसा अभ्यास कर रहे थे। मुझे पता चला कि यदि हम उन लोगों को आशीर्वाद देने के बारे में यीशु की शिक्षा का पालन करते हैं जो आपको शाप देते हैं, तो यह वास्तव में आपको उस बंधन से मुक्त कर देता है। यह उन लोगों को आशीर्वाद देता है जो आपको श्राप देते हैं, आप जानते हैं, नीतिवचन कहता है कि जो श्राप योग्य नहीं है वह आप पर नहीं पड़ेगा।

और फिर, बिलाम इस्राएल को श्राप देने की कोशिश कर रहा था और ऐसा तब तक नहीं कर सका जब तक कि यह उचित नहीं था क्योंकि वह उसे श्राप नहीं दे सकता था क्योंकि भगवान ने उसे आशीर्वाद दिया था। और इसलिए, उसी तरह, हम भरोसा कर सकते हैं कि ईश्वर हमारी सहायता करता है। हम शाप का बदला शाप के बदले नहीं देते।

हम उपहास के बदले उपहास का जवाब नहीं देते। हम प्यार से जवाब देते हैं। हमें दृढ़ता से जवाब देना पड़ सकता है।

यीशु ने निश्चित रूप से फरीसियों और सद्दूकियों के साथ ऐसा किया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम लोगों से प्यार करना या उनकी देखभाल करना या प्रार्थना करना बंद कर दें कि वे भी भगवान का प्यार देखेंगे। हमारे पास यहां सकारात्मक और नकारात्मक दोनों उदाहरण हैं जो यीशु प्रेमपूर्ण शत्रुओं के संदर्भ में देते हैं।

इसका सकारात्मक उदाहरण ईश्वर है। प्राचीन नैतिकता में ईश्वर अक्सर अनुकरण का विषय था। और यीशु वह यहाँ देते हैं।

वह कहता है, अच्छा, ईश्वर अपनी वर्षा न्यायी और अन्यायी दोनों पर भेजता है। वह न्यायी और अन्यायी दोनों पर समान रूप से प्रकाश डालता है। और वह एक नकारात्मक उदाहरण देता है।

लैब्रिकस और अन्य जगहों पर अन्यजातियों को नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है। वह कहते हैं, आप जानते हैं, हमें एहसास है कि अन्यजाति हमेशा बाइबिल के कानून के अनुसार व्यवहार नहीं करते हैं, है ना? यहां तक कि अन्यजाति, यहां तक कि बुतपरस्त भी उन लोगों से प्यार करते हैं जो उनसे प्यार करते हैं। तो, यदि आप उन लोगों से प्यार करते हैं जो आपसे प्यार करते हैं, तो आप उनसे बेहतर व्यवहार कैसे कर रहे हैं? नहीं, आप उन लोगों से भी प्यार करते हैं जो आपसे प्यार नहीं करते, उनसे प्यार करते हैं।

और मैं कुछ ऐसी स्थितियों में रहा हूँ जहाँ मैं काफी समय तक रहा हूँ जहाँ मैं हर व्यक्ति का दिल जीतने में सक्षम था। उन्हें प्यार दिखाने में मुझे सबसे ज़्यादा एक साल लगा। अब, फिर, इसकी भी हमेशा गारंटी नहीं होती है।

लेकिन अक्सर, प्यार लोगों के दिलों को बदल सकता है। लेकिन जब ऐसा नहीं होता, तब भी हम लोगों से प्यार करते हैं। श्लोक 44, अपने उत्पीड़कों के लिए प्रार्थना करो।

आप जानते हैं, 2 इतिहास 24 में, जकर्याह अपने उत्पीड़कों पर न्याय के लिए प्रार्थना करता है। भजन 137 के साथ भी ऐसा ही है। हे भगवान, वह कितना धन्य होगा जो अपने बच्चों को पकड़ता है और चट्टानों पर पटक देता है जैसे उन्होंने हमारे बच्चों को मारा था।

यिर्मयाह 15, न्याय के लिए प्रशंसा। नए नियम में प्रकाशितवाक्य 6, निर्णय के लिए प्रशंसा। और उसके लिए जगह हो सकती है।

मेरे पास लैटिन अमेरिकी देश का एक छात्र था, जहां दक्षिणपंथी तानाशाही के दौरान, वह घर आया, तो उसने पाया कि उसके माता-पिता को एक पड़ोसी ने मार डाला था। और उसने प्रतिशोध के परमेश्वर के लिये प्रार्थना की। और आप इसे समझ सकते हैं।

मेरा मतलब है, मैं उसे यह नहीं बता सका कि उसका ऐसा करना गलत था। उन्होंने इसे अपने हाथों में नहीं लिया, उन्होंने प्रार्थना की। लेकिन यहां उच्च नैतिकता है, यहां उच्च मांग है।

और यह हमारे लिए एक चुनौती है। मैं उत्तरी नाइजीरिया के अपने एक अन्य छात्र सुंदिया गण के साथ प्रार्थना कर रहा था। खैर, वास्तव में नाइजीरिया के मध्य क्षेत्र से।

और एक खास राज्य में कुछ लोग शरिया कानून की मांग कर रहे थे। और इसलिए, कुछ ईसाई राजधानी में गए थे, उन्होंने राज्य का बहुत कुछ बनाया और उन्होंने कहा, नहीं, हम शरिया कानून नहीं चाहते हैं। और कुछ जिहादियों ने उन्हें गोलियों से भूनना शुरू कर दिया।

वे स्वचालित हथियारों वगैरह के साथ तैयार होकर आये थे। और रविवार को, जहाँ तक वह जानता था, उसके चचेरे भाई की हत्या कर दी गई थी। उसने सोचा कि शायद उसके भाई वहाँ थे।

उसे लगा कि शायद उसके भाई मारे गये हैं। उसे लगा कि उसकी पत्नी यहीं गयी है और उसकी पत्नी की हत्या कर दी गयी है। वह नहीं जानता था कि वे जीवित थे या मृत।

उनके पास उनसे संपर्क करने का कोई रास्ता नहीं था। और जब हम एक साथ प्रार्थना कर रहे थे, मैंने प्रार्थना की, हे प्रतिशोध के देवता, उठो, शक्तिशाली योद्धा, अपने लोगों का बदला लो। मैंने सोचा कि मैंने वास्तव में अच्छी प्रार्थना की है।

और प्रार्थना समाप्त करने के बाद, रविवार की प्रार्थना की। उन्होंने कहा, हे भगवान, इन्हें माफ कर दो। यदि हम मर जाएं, तो हमें आशा है, परन्तु उन्हें उस अनन्त जीवन की आशा नहीं है जो तू देता है।

और मुझे शर्म आ रही थी क्योंकि रविवार को मैंने ईश्वर के एक आदमी के रूप में प्रार्थना की, जितना मैंने प्रार्थना की थी उससे कहीं अधिक गहरा ईश्वर का आदमी था। वर्षों पहले, मैंने पाठ्यक्रम में पहले उल्लेख किया था, मुझ पर झूठा आरोप लगाया गया था। मुझे बहुत बुरी स्थिति में डाल दिया गया था और मुझे लगा कि इससे मेरा मंत्रालय नष्ट हो जाएगा।

आखिरकार, कुछ वर्षों के बाद मुझे दोषमुक्त कर दिया गया। लेकिन जो व्यक्ति मुख्य रूप से स्थिति को भड़काने वाला था, वह ठीक-ठीक जानता था कि वह क्या कर रहा है। इस बारे में कोई सवाल ही नहीं था।

स्वीकार किया कि वह क्या कर रहा था। तुम्हें पता है, मैं शुरू से ही उससे प्यार करता था। पहले कुछ महीनों तक मैं उससे प्यार करता था।

लेकिन कुछ समय बाद, बाइबल कहती है कि अपने उत्पीड़कों के लिए प्रार्थना करो। मैंने खुद को उसके लिए प्रार्थना करते हुए पाया, कि भगवान उसे मार डालेगा। और पवित्र आत्मा ने मुझे डांटा।

मैंने कहा, भगवान, यह उचित नहीं है। सब कुछ, मेरा मतलब है, आपने मुझे जो करने के लिए बुलाया था, मैं इस आरोप के कारण वह भी नहीं कर सकता। लेकिन भगवान ने मुझे याद दिलाया कि मैं वह कर सकता हूँ जो उन्होंने मुझे करने के लिए कहा है।

क्योंकि वह मेरे साथ था। और मुझे इस व्यक्ति से प्यार करना था। यह आसानी से नहीं आया।

यह जल्दी नहीं आया। लेकिन अंततः, वह उस स्थान पर आ गया जहाँ मैं कर सकता था, अगर मैंने उसे देखा होता, तो मैं दौड़कर उसे गले लगा लेता। मैंने तुम्हें प्रेम किया।

और मैं अब उससे प्यार करता हूँ। ईश्वर की तरह परिपूर्ण बनो। श्लोक 48.

अब लूका 6:36 में कहा गया है, अपने स्वर्गीय पिता के समान दयालु बनो। संभवतः एक अरामी शब्द है जिसका संपूर्ण अनुवाद किया जा सकता है। इसका मतलब परफेक्ट हो सकता है।

यह दयालु हो सकता है। इसमें इनमें से कुछ अलग-अलग चीजें शामिल हो सकती हैं। विद्वानों ने इन दोनों के पीछे अरामी शब्द का हाथ बताया है।

तो, यह कुछ अलग-अलग तरीकों से अनुवादित होकर सामने आता है। लेकिन पुराने नियम में, यह कहता है, व्यवस्थाविवरण 18.13 के ग्रीक अनुवाद में, यह कहता है, अपने परमेश्वर यहोवा के साथ सिद्ध या निर्दोष बनो। इसी प्रकार, लैव्यव्यवस्था 11, लैव्यव्यवस्था 19, लैव्यव्यवस्था 20।

पवित्र बनो जैसे ईश्वर पवित्र है। तो, भगवान हमारे लिए एक उदाहरण प्रदान करता है। यदि ईश्वर का मानक है, तो हममें से कोई भी घमंड नहीं कर सकता।

इसलिए, जब तक हम मैथ्यू 5 के अंत तक पहुंचते हैं, यीशु की मांगें काफी उग्र हो चुकी होती हैं। क्योंकि ये मांगें सिर्फ इस बात पर नहीं हैं कि हम बाहरी तौर पर क्या करते हैं। ये हमारे दिलों की मांग हैं, कि हमारे दिल सही हों।

और यह कुछ ऐसा है जो तब घटित होता है जब हम दोबारा जन्म लेते हैं। ईश्वर हमें रूपांतरित करें, और हमें मसीह में एक नया जीवन दें। और जैसे-जैसे हम ईश्वर को हमारे दिलों को नरम करने और हमें मसीह की छवि के अनुरूप बनाने देते हैं, जैसे-जैसे हम इन परीक्षणों से गुजरते हैं और सही तरीकों से प्रतिक्रिया देना सीखते हैं।

यदि आप सही तरीकों से प्रतिक्रिया देना नहीं सीख रहे हैं, तो संभवतः आपको वहां तक पहुंचने के लिए और अधिक परीक्षण करने होंगे। लेकिन किसी भी मामले में, जैसे-जैसे हमें ये परीक्षण मिलते हैं, हम बढ़ते हैं। और मैथ्यू 6 इस विषय को आगे बढ़ाता है।

दूसरों के द्वारा महिमामंडित होने के लिए अपना धर्म मत करो। मत्ती 6, पद 1। आप परमेश्वर की महिमा करने के लिए इसे दूसरों के सामने कर सकते हैं, लेकिन दूसरों के सामने ऐसा न करें ताकि आपकी महिमा हो। दोनों मामलों में यह एक ही ग्रीक शब्द है।

और वह इसके तीन उदाहरण देते हैं. अपना दान इसलिए मत करो कि दूसरे इसे देखेंगे और आपका सम्मान करेंगे। अपनी प्रार्थना दूसरों के सामने मत करो ताकि वे तुम्हें देखें और तुम्हारा सम्मान करें।

अपना उपवास दूसरों के सामने न करो ताकि वे तुम्हें देखें और तुम्हारा आदर करें। और उपवास के साथ, प्राचीन लोग आम तौर पर उपवास करते समय अपने सिर को न तो शेव करते थे, न धोते थे और न ही अपना सिर मलते थे। अभिषेक से आपकी खोपड़ी सूख सकती है इसलिए आप वहां अभिषेक कर सकते हैं।

लेकिन साथ ही, यूनानियों में व्यायाम से खुद का अभिषेक करने की यह प्रथा थी, और फिर वे स्ट्रिगिल नामक कोई चीज लेते थे और उसे खुरच कर निकाल देते थे। यह उन तरीकों में से एक था जिनसे उन्होंने खुद को साफ़ किया। ठीक है, इसलिए आम तौर पर यदि आप उपवास कर रहे हैं और आपने दाढ़ी नहीं बनाई है, आपने स्नान नहीं किया है, आपने खुद का अभिषेक नहीं किया है, तो यहूदी लोग चारों ओर देखेंगे और कहेंगे, ठीक है, वह व्यक्ति उपवास कर रहा होगा।

लेकिन आप लोगों को यह नहीं बताते कि आप उपवास कर रहे हैं। इसका मतलब यह होगा, उदाहरण के लिए, आज मेरी संस्कृति में, मैं अपने दाँत ब्रश करता हूँ ताकि उन्हें यह गंध न आ सके कि मैं उपवास कर रहा हूँ। अब, यह एक सामान्य सिद्धांत है।

मुझे याद है कि कई बार मैं अपने माता-पिता के साथ था और मैं उपवास कर रहा था और मेरी माँ ने भोजन तय कर दिया था और मैं नहीं खाऊँगा, लेकिन मैं उन्हें बताना नहीं चाहता था कि मैं उपवास कर रहा हूँ। वास्तव में, इससे बहुत बुरी स्थिति पैदा हो गई। शायद मुझे उसे बता देना चाहिए था।

लेकिन किसी भी मामले में, हम दूसरों द्वारा सम्मानित होने के लिए ऐसा नहीं करते हैं। हम ऐसा इसलिए नहीं करते ताकि दूसरे हमारे बारे में अच्छा सोचें। ये काफी यादृच्छिक उदाहरण हैं, लेकिन ये उन चीजों के काफी प्रतिनिधि उदाहरण हैं जिन्हें लोग धार्मिकता के रूप में मानते हैं।

द बुक ऑफ टोबिट, एपोक्रीफा की एक किताब, एक व्यापक रूप से ज्ञात कहानी है। दूसरों ने इसके बारे में बात की, ठीक है, टोबिट की पुस्तक में 12.8 में ये उदाहरण हैं। अन्य लोगों ने टोरा, मंदिर सेवा और दान के संदर्भ में धार्मिकता के बुनियादी उदाहरणों के बारे में बात की। बाद के कुछ रब्बियों ने प्रार्थना, दान और पश्चाताप के बारे में बात की, जिसे उपवास में व्यक्त किया जा सकता है।

किसी भी मामले में, यीशु दूसरों द्वारा देखे जाने के लिए अपनी धार्मिकता न करने के ये उदाहरण देते हैं और उनके साथ मिलने वाले शाश्वत प्रतिफल की बात करते हैं। यदि आप उन्हें केवल भगवान को दिखाने के लिए करते हैं, तो आपको भगवान द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। लेकिन

अगर आप पहले से ही दूसरों को दिखाने के लिए ऐसा करके अपना इनाम पा चुके हैं, तो कुछ लोग बाहर से तो पवित्र दिखते हैं, लेकिन वास्तव में वे व्यावहारिक नास्तिक होते हैं।

क्योंकि वे वास्तव में इस बारे में नहीं सोच रहे हैं कि भगवान उन्हें कैसे पुरस्कृत करेंगे। वे अब लोगों से वह सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं जो वे कर सकते हैं। वे वास्तव में भगवान के बारे में नहीं सोच रहे हैं।

यीशु कहते हैं कि जो लोग इसे दूसरों को दिखाने के लिए करते हैं, उन्हें पहले ही पूरा इनाम मिल चुका होता है, जो प्राचीन व्यावसायिक दस्तावेजों पर इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था, जिसका अर्थ है पूरा भुगतान किया गया। इस व्यक्ति पर इससे अधिक कुछ भी बकाया नहीं है। इनमें से एक उदाहरण, पहला उदाहरण, गुप्त रूप से अपना दान करना है।

अध्याय 6, श्लोक 2 से 4 तक। और वह यहां अतिशयोक्ति का उपयोग करता है। जब तुम अपना दान गुप्त रूप से करो, तो अपने आगे ढिंढोरा न पीटो। खैर, जब वे दान कर रहे थे तो वास्तव में किसी ने भी उनके सामने तुरही नहीं बजाई।

वस्तुतः किसी ने ऐसा नहीं किया। शायद यह तुरही हो सकती है जो लोगों को प्रार्थना के लिए बुला रही हो। हो सकता है कि यह मंदिर में तुरही के आकार के दान बक्से हों जिसकी ओर यह इशारा कर रहा हो।

संभवतः यह अतिशयोक्ति मात्र है। संभवतः यह बात को स्पष्ट करने का एक ग्राफिक तरीका मात्र है। आप जानते हैं, ये लोग चाहते हैं कि हर कोई उन्हें दान देते हुए देखे।

इसलिए, अपना पैसा लगाने से पहले, वे तुरही बजाते हैं। और मेरे संगीत को क्षमा करें। लेकिन फिर भी, उन्होंने कहा, अपने दाहिने हाथ को पता न चलने दें कि आपका बायाँ हाथ क्या कर रहा है।

जाहिर है, मैं तब से वहां नहीं था जब एक प्राचीन वक्ता ने इस बारे में बात की थी जब किसी ने अपने हाथों से सांत्वना दी थी, स्वर्ग और पृथ्वी के बारे में बात की थी। खैर, मैंने उन्हें मिश्रित कर दिया। ठीक है, मुझे यह कहना चाहिए था कि अपने दाहिने हाथ को यह न जानने दें कि आपका बायाँ हाथ क्या कर रहा है।

किसी भी मामले में, उस तरह की अतिशयोक्ति अन्यत्र भी जानी जाती थी। दूसरी शताब्दी में मार्कस ऑरेलियस एक स्टोइक दार्शनिक हैं। कहते हैं, अपने कान को अपनी सुनने न दो।

यह कहने का एक ग्राफिक तरीका था, इसे गुप्त ही रहने दें। दान के बदले स्वर्ग में खजाना प्राप्त करना। यहूदी लोग पहले से ही ऐसा मानते थे।

आपके पास वह टोबिट की किताब और अन्य जगहों पर है। और यह यहूदी धर्म में गरीबों की देखभाल की एक मानक अपेक्षा है। पूरे इतिहास में कई लोगों ने इसे देखा है।

बेशक, सेंट एंथोनी, सेंट फ्रांसिस, वेस्ले। जहां तक वेस्ले का सवाल है, भण्डारीपन गरीबों की देखभाल करना था। और हमें अपने सभी संसाधनों को लोगों की जरूरतों की देखभाल में लगाना चाहिए।

लोगों को कड़ी मेहनत करना सीखना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया। लेकिन हमें गरीबों का ख्याल रखना चाहिए।

हमें उनके लिए और अधिक हासिल करने में सक्षम होने के रास्ते बनाने चाहिए। और वेस्ले ने कहा, तुम्हें पता है, अगर जब मैं मरूंगा तो मेरे नाम पर मुट्ठी भर सिक्कों से ज्यादा कुछ होगा, तो हर कोई मुझे चोर और झूठा कहे। क्योंकि वह अपने संसाधनों को दूसरों की मदद के लिए समर्पित करना चाहता था।

मैथ्यू अध्याय 6 श्लोक 5 से 15। यीशु प्रार्थना के बारे में सिखाते हैं। और जिस तरह से वह इसे स्थापित करता है वह बहुत सावधानीपूर्वक संरचना के साथ होता है कि आपको किस तरह से प्रार्थना नहीं करनी चाहिए और किस तरह से आपको प्रार्थना करनी चाहिए।

सबसे पहले, पाखंडियों की तरह इस तरह प्रार्थना मत करो, 6.5. इस तरह प्रार्थना करो, गुप्त रूप से, श्लोक 6। अन्यजातियों की तरह प्रार्थना मत करो, श्लोक 7 और 8। इस तरह प्रार्थना करो। और फिर वह छंद 9 से 13 में उदाहरण देता है जिसे हम प्रभु की प्रार्थना कहते हैं। और फिर छंद 14 और 15 में क्षमा के बारे में याचिका को और विकसित करता है।

खैर, गुप्त रूप से प्रार्थना करना। वह यहां कुछ अतिशयोक्ति का भी प्रयोग करता है। अपनी कोठरी या अपने भंडार कक्ष में जाओ।

वास्तव में प्रत्येक घर में उनमें से एक भी नहीं था। लेकिन हम जानते हैं कि यह अतिशयोक्ति है क्योंकि यीशु स्वयं भंडार कक्ष में नहीं गये थे। वह ऊपर पहाड़ियों में चला गया।

लेकिन यह अभी भी उसी बिंदु पर मिलता है। वह भगवान के साथ अकेले रहने की प्रार्थना करने के लिए कहीं और चला गया। इसलिए ऐसा नहीं होगा कि अन्य लोग ही उसे देखेंगे।

इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने कभी सार्वजनिक रूप से प्रार्थना नहीं की। उन्होंने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना भी की। लेकिन विशेषकर उन्होंने अकेले में प्रार्थना की।

कभी-कभी हमारे पास ऐसे लोग होते हैं जो सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करना चाहते हैं और चाहते हैं कि सार्वजनिक रूप से प्रार्थना की जाए। हम अकेले में प्रार्थना करने में भी समय नहीं बिताते। अतिशयोक्ति।

घरों में भीड़ थी। उन्हें कसकर एक साथ पैक किया गया था। गाँव प्रायः पास-पास होते थे।

यहीं पर यीशु को कभी-कभी पहाड़ियों पर जाना पड़ता है। जैसा कि मार्क अध्याय 1 में है। वह किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करता है जो प्रार्थना के समय सड़क पर रहने की व्यवस्था करता है। चाहता है कि प्रार्थना करते समय हर कोई उन्हें देखे।

यीशु गुप्त रूप से प्रार्थना करने को कहते हैं। प्रार्थना करो कि केवल तुम्हारे पिता तुम्हें देखें। वह कहते हैं कि अन्यजातियों की तरह प्रार्थना मत करो।

वे शब्दाडम्बरों का भरपूर प्रयोग करते थे। बुतपरस्तों ने अपने देवताओं के साथ छेड़छाड़ करने के लिए प्रार्थना करने की कोशिश की। वे अपने देवताओं के अलग-अलग नामों का ढेर लगा देंगे।

यह एक दस्तावेज़ था जिसे लोग अक्सर उद्धृत करते हैं जहां व्यक्ति इस देवी के सभी संभावित नाम बताता है जिसका वह आह्वान कर रहा है। और अंत में कहता है, या जिस भी अन्य नाम से आप पुकारना चाहें। बस अगर मैं एक चूक गया।

वे अपने देवताओं को हेरफेर करने के तरीकों से प्रार्थना करेंगे। आंशिक रूप से देवताओं से अपील करने के लिए नामों का ढेर लगाकर। वे विभिन्न बलिदानों, भेंटों और देवताओं को दिए गए उपकारों की भी अपील करते थे।

अच्छा, मैंने तुम्हें यह भेंट दे दी। निश्चित रूप से आप मुझे मेरे खेत में कुछ बारिश वगैरह दे सकते हैं। रोमन रीति-रिवाज में, एक भी अनुष्ठान शब्दांश गड़बड़ा जाता है।

प्रार्थना बर्बाद कर दी। यदि पुजारी की टोपी गिर जाती, तो उन्हें प्रार्थना दोबारा करनी पड़ती। इसलिए, लोग बुतपरस्त प्रार्थना में हेरफेर करने के सूत्रों में बहुत अधिक रुचि रखते थे।

लेकिन मुद्दा स्वरूप का इतना नहीं है। यह प्रेरणा है। यीशु एक संक्षिप्त प्रार्थना करते हैं।

कांगो में मेरे ससुर अक्सर लोगों के लिए प्रार्थना करते थे। बस एक बहुत ही सरल प्रार्थना। और अक्सर भगवान तुरंत उत्तर देते थे।

यह कोई लम्बी, विस्तृत प्रार्थना नहीं थी। कुछ लोग लंबी-चौड़ी प्रार्थनाएँ करते हैं और ईश्वर उन्हें सुनता भी है। लेकिन यीशु यहां बहुत संक्षिप्त प्रार्थना करते हैं।

यह शब्दों का ढेर लगाने से नहीं है। हम क्यों जानते हैं कि वह हमारी सुनता है? खैर, वह श्लोक 7 में कहते हैं, क्योंकि आपका स्वर्गीय पिता जानता है कि आप क्या मांगते हैं, वह आपके मांगने से पहले ही जानता है कि आपको क्या चाहिए। तो ऐसा होने पर, हमारी प्रार्थना का उत्तर देने का आधार यह नहीं है कि हम शब्दाडंबर का ढेर लगा दें।

ऐसा नहीं है कि हमें अनुष्ठान बिल्कुल सही मिलता है या सूत्र बिल्कुल सही मिलता है। अतीत में कभी-कभी, मैं ऐसे सूत्रों के साथ प्रार्थना करता था जो बाइबिल आधारित नहीं थे और मैं इसे नहीं जानता था और भगवान ने मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया क्योंकि मैं इससे बेहतर कुछ नहीं जानता था। लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि हम इसी आधार पर प्रार्थना करते हैं।

हमारे पिता। और इसीलिए यीशु ने इस तरह से प्रार्थना शुरू की। हमारे पिता।

क्या आप कभी प्रभु की प्रार्थना करते हैं? इसमें कुछ अन्य यहूदी प्रार्थनाओं के साथ काफी समानताएं हैं। और हम अगले सत्र में इसके बारे में और अधिक बात करेंगे।

यह डॉ. क्रेग कीनर मैथ्यू की पुस्तक पर पढ़ा रहे हैं। यह माउंट पर उपदेश, मैथ्यू 5-6 पर सत्र 8 है।